

वैश्विक जलवायु जोखमि सूचकांक 2021

प्रलमिस के लयि:

वैश्विक जलवायु जोखमि सूचकांक, उषणकटबिधीय चक्रवात, चक्रवात फानी

मेन्स के लयि:

जलवायु परविरतन संबन्धी मुद्दे

चर्चा में क्यों?

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण थकि टैंक 'जर्मनवॉच' ने वैश्विक जलवायु जोखमि सूचकांक 2021 (Global Climate Risk Index 2021) जारी कयि।

- यह इस सूचकांक का 16वाँ संस्करण है। यह प्रतविरष प्रकाशति होता है।
- बॉन और बर्लनि (जर्मनी) में स्थति जर्मनवाच एक स्वतंत्र वकिस और पर्यावरण संगठन है जो सतत् वैश्विक वकिस के लयि कार्यरत है।

Ranking 2019 (2018)	Country
1 (54)	Mozambique
2 (132)	Zimbabwe
3 (135)	The Bahamas
4 (1)	Japan
5 (93)	Malawi
6 (24)	Islamic Republic of Afghanistan
7 (5)	India
8 (133)	South Sudan
9 (27)	Niger
10 (59)	Bolivia

प्रमुख बदि

- सूचकांक के बारे में :
 - सूचकांक इस बात का वश्लेषण करता है कजलवायु परविरतन के कारण उत्पन्न मौसम संबन्धति घटनाओं (तूफान, बाढ़, हीट वेव आदी)

के प्रभावों से देश और क्षेत्र कसि हद तक प्रभावति हुए हैं ।

- इसके अंतर्गत घातक मानवीय प्रभावों और प्रत्यक्ष आर्थिक नुकसान दोनों का विश्लेषण कया जाता है ।
- इसमें वर्ष 2019 के उपलब्ध नवीनतम आँकड़ों और 2000-2019 के दशक के आँकड़ों का विश्लेषण कया गया है ।
- वर्ष 2021 के सूचकांक में संयुक्त राज्य अमेरिका के आँकड़ों को शामिल नहीं कया गया है ।
- जलवायु जोखिम सूचकांक स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि कसि भी महाद्वीप या कसि भी क्षेत्र में बढ़ते जलवायु परिवर्तन के नतीजों को अब नज़रअंदाज नहीं कया जा सकता है ।
- चरम मौसम की घटनाएँ सबसे गरीब देशों को अधिक प्रभावति करती हैं क्योंकि ये विशेष रूप से खतरे के हानिकारक प्रभावों के प्रती संवेदनशील होते हैं, इनकी प्रतिक्रिया क्षमता कम होती है और इन्हें पुनर्निर्माण तथा पुनर्प्राप्तिके लिये अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है ।
- जलवायु परिवर्तन से उच्च आय वाले देश भी प्रचंड रूप से प्रभावति हो रहे हैं ।

CRI 2000-2019 (1999-2018)	Country
1 (1)	Puerto Rico
2 (2)	Myanmar
3 (3)	Haiti
4 (4)	Philippines
5 (14)	Mozambique
6 (20)	The Bahamas
7 (7)	Bangladesh
8 (5)	Pakistan
9 (8)	Thailand
10 (9)	Nepal



■ वर्ष 2021 के प्रमुख नषिकरण:

- मोज़ाम्बिक, ज़मिबाब्वे और बहामास वर्ष 2019 में सबसे अधिक प्रभावति देश थे ।
- 2000 से 2019 की अवधि के लिये प्यूरटो रिको, म्याँमार और हैती सर्वोच्च स्थान पर हैं ।
- तूफान और उनके प्रत्यक्ष प्रभाव- वर्षा, बाढ़ एवं भूस्खलन, वर्ष 2019 में नुकसान और क्षति के प्रमुख कारण थे ।
- वर्ष 2019 में दस सबसे अधिक प्रभावति देशों में से छह उष्णकटबिंधीय चक्रवातों से प्रभावति हुए थे । हाल के तकनीकों से पता चलता है कि वैश्विक औसत तापमान वृद्धि के प्रत्येक दसवें हसिसे के साथ गंभीर उष्णकटबिंधीय चक्रवातों की संख्या में वृद्धि होगी ।
- वर्ष 2019 में चरम मौसमी घटनाओं के मात्स्रात्मक प्रभावों से सबसे अधिक प्रभावतिदस में से आठ देश नमिन से नमिन-मध्यम आय वर्ग के हैं । इनमें से आधे सबसे कम विकसित देश हैं ।

■ भारत की स्थिति:

- भारत ने पछिले वर्ष की तुलना में अपनी रैंकिंग में सुधार कया है । वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक-2021 में भारत 7वें स्थान पर है, जबकि वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक-2020 में भारत 5वें स्थान पर था ।
- भारतीय मानसून वर्ष 2019 में सामान्य अवधि से एक माह अधिक समय तक जारी रहा, इसके चलते अतिरिक्त बारिश के कारण काफी कठनाई हुई । इस दौरान बारिश सामान्य से 110 फीसदी तक हुई, जो वर्ष 1994 के बाद सबसे अधिक है ।
- अधिक वर्षा के कारण आने वाली बाढ़ से लगभग 1800 लोगों की मौत हुई और लगभग 1.8 मिलियन लोगों को पलायन करना पड़ा ।
- कुल मलाकर 11.8 मिलियन लोग तीव्र मानसून के मौसम से प्रभावति हुए थे और इससे अनुमानतः 10 बलियन अमेरिकी डॉलर की आर्थिक क्षति हुई ।
- भारत में कुल 8 उष्णकटबिंधीय चक्रवात आए, जिनमें से चक्रवात फानी (मई 2019) के कारण सबसे ज़्यादा नुकसान हुआ ।
- भारत में हिमालय के ग्लेशियर, समुद्र तट और रेगसितान ग्लोबल वार्मिंग से बुरी तरह प्रभावति हुए हैं ।
- यह रपॉर्ट भारत में गरीबम लहर की संख्या में वृद्धि, चक्रवातों की तीव्रता एवं आवृत्ति में वृद्धि और ग्लेशियरों के पिघलने की बढ़ी हुई दर की ओर भी इशारा करती है ।

■ सुझाव:

- वैश्विक कोवडि-19 महामारी ने इस तथ्य को दोहराया है कि जोखिम और भेदयता दोनों प्रणालीगत व परस्पर जुड़े हुए हैं । इसलिये विभिन्न प्रकार के जोखिमों (जलवायु, भू-भौतिकीय, आर्थिक या स्वास्थय संबंधी) से सबसे कमज़ोर लोगों की सुरक्षा करना महत्त्वपूर्ण है ।
- कोवडि-19 महामारी के कारण वर्ष 2020 में अंतरराष्ट्रीय जलवायु नीति प्रक्रिया बाधति होने के बाद दीर्घकालिक प्रगतिएवं अनुकूलन के लिये वर्ष 2021 और 2022 में पर्याप्त वित्तीय समर्थन की उम्मीद है ।
- प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिये नमिनलखिति कदम उठाए जाने की आवश्यकता है:

- भविष्य में होने वाले नुकसान और कष्टों के संबंध में कमज़ोर देशों को समर्थन प्रदान करने के बारे में नरिणय नरितरता के आधार पर नरिधारति कथिा जाना है ।
- इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लयि वत्तितीय संसाधन उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक कदम उठाना ।
- जलवायु परविरत्न के अनुकूलन हेतु उपायों के कारयान्वयन को मज़बूत करना ।
- संभावति नुकसान को रोकने या कम करने के लयि प्रभावी जलवायु परविरत्न शमन और अनुकूलन पर धयान देना ।

स्रोत: द हट्टि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/global-climate-risk-index-2021>

